खण्ड –4, अंक – 1, वर्ष – 2016, मु0पृ0 159–163, D.O.I. :10.22445/avsp.v4i1.4408

नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वान–वर्ष 2016

दिव्यांश श्रीवास्तव
छात्र, ला मार्टीनियर कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
divyansh_21@hotmail.com

प्राप्त तिथि– 14.10.2016; स्वीकृत तिथि– 20.10.2016

सार– प्रस्तुत लेख में वर्ष–2016 हेतु चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, साहित्य, शांति एवं अर्थशास्त्र के क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान दिये जाने वाले नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वानों एवं उनके योगदान का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

बीज शब्द– नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वान, चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, शांति, अर्थशास्त्र, साहित्य।

Nobel award winner laureates-year 2016

Divyansh Srivastava
Student, La Martiniere College, Lucknow-226001, U.P., India
divyansh_21@hotmail.com

Abstract- The short description of Nobel award winner laureates and their contributions for the year 2016 in the areas of Medicine, Physics, Chemistry, Peace, Economics and Literature is given in the present article.

Key words- Nobel award winner laureates, Medicine, Physics, Chemistry, Peace, Economics, Literature.

1. **चिकित्सा के क्षेत्र में**

योशीनोरी ओशूमी
(जन्म–1945, फुकुओका, जापान)

वर्ष 2016 में चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा नियुक्त नोबेल एसेम्बली ने केरोलिन्स्का इंस्टीट्यूट, स्वीडन, में दिनांकः 03.10.2016 को जापान के टोक्यो इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, टोक्यो के चिकित्सा विज्ञानी प्रोफेसर **योशीनोरी ओशूमी** को "**मिकेनिज्म फॉर ऑटोफेजी**" पर उनकी खोज के लिए प्रदान किया गया। शरीर में ऑटोफेजी वह मूलभूत प्रक्रिया है जिसमें शरीर के प्रतिरोधी तंत्र में कोशिकीय अवयवों का क्षरण(डिग्रेडेशन) व पुनःचक्रण(रिसायक्लिंग) होता है।

"**ऑटोफेजी**" शब्द का अर्थ होता है– स्वयं को स्वयं ही मारना(सेल्फ ईटिंग)। मानव की कोशिकाओं में छोटे–छोटे कोष्ठक होते हैं जिन्हें "सैल्स" कहते हैं। सन् 1960 में पहली बार, वैज्ञानिकों ने इन छोटे कोष्ठकों में "लाइसोसोम" नामक

गोलाकार बोरे जैसा एक रचना पायी, जो पुराने हो गये कोशिकाओं को स्वयं ही खा जाता है अर्थात् नष्ट कर देता है ताकि नयी कोशिकाएं उसकी जगह ले सकें, परन्तु इसे सिद्ध कर पाना अत्यन्त कठिन था। सन् 1990 के प्रारम्भ में योशीनोरा ओशूमी द्वारा इससे संबंधित लगातार अनेकों बुद्धिजनक परीक्षण किये गये। योशीनोरा ने बेकरी में प्रयुक्त यीस्ट(खमीर) को ऑटोफेजी के लिए आवश्यक जीन की पहचान के लिए प्रयोग किया। परीक्षणों के उपरांत वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यीस्ट(खमीर) में ऑटोफेजी की क्रिया विधि ही वह अत्याधुनिक प्रक्रिया है जो मानव कोशिकाओं में घटित होती है।

उनकी इस खोज से कैंसर, पार्किंसन और टाइप–2 डायबिटीज जैसी बीमारियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। योशीनोरा ओशुमी को नोबेल पुरस्कार की सम्पूर्ण राशि(80 लाख स्वीडिश क्रोनर या 9.33 लाख डॉलर या लगभग 6.20 करोड़ रुपये) का पूरा हिस्सा प्राप्त होगा।

2. **भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में**

डेविड जे0 थाउलेस
(जन्म–1934, बिअर्सडेन, यू0के0)

एफ0 डन्कन एम0 हेल्डेन
(जन्म–1951, लन्दन, यू0के0)

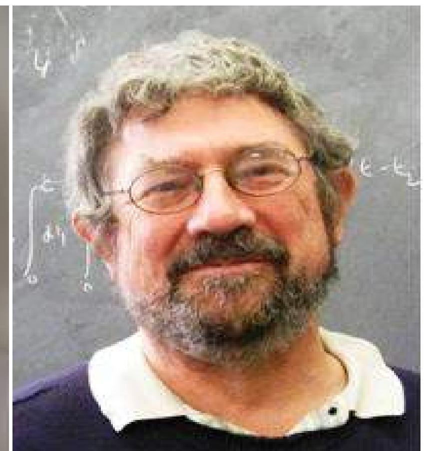

जे0 माइकल कोस्टेर्लिट्ज
(जन्म–1942, एबरडीन, यू0के0)

वर्ष 2016 में भौतिक विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन, सीटल, वाशिंगटन, यू0एस0ए0 के भौतिकविद्, सेवानिवृत्त **प्रोफेसर डेविड जे0 थाउलेस**, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, एन0जे0, यू0एस0ए0 के भौतिकविद् **प्रोफेसर एफ0 डन्कन एम0 हेल्डेन** तथा ब्राउन यूनिवर्सिटी, प्रोविडेंस, रोड्स आइसलैंड, यू0एस0ए0 के भौतिकविद् **प्रोफेसर जे0 माइकल कोस्टेर्लिट्ज** को संयुक्त रूप से प्रदान किये जाने की घोषणा दिनांकः 04.10.2016 को की गई। कन्डेन्स्ड मैटर फिजिक्स के तीनों भौतिक शास्त्रियों को भौतिकी का नोबेल पुरस्कार उनके कार्य "**फॉर थियोरेटिकल डिस्कवरीज ऑफ टोपोलॉजिकल फेज ट्रांजीशन एण्ड टोपोलॉजिकल फेजेज ऑफ मैटर**"(**पदार्थ के विचित्र रूपों के अध्ययन**) पर प्रदान किया गया। ब्रिटिश वैज्ञानिकों की इस खोज से भविष्य में छोटे सुपरफास्ट कम्प्यूटरों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। अमेरिका में रह रहे तीनों वैज्ञानिकों ने उच्च गणित के ज्यामिति विस्तार वाली धारा "**टोपोलॉजी(संस्थिति विज्ञान)**" का प्रयोग कर पदार्थ की विलक्षण अवस्थाओं का रहस्य उजागर किया। नोबेल एसेम्बली के कथनानुसार इन वैज्ञानिकों ने एक ऐसी अबूझ दुनिया को समझने का रास्ता प्रशस्त किया है, जहाँ पदार्थ कई विचित्र रूपों में मौजूद हो सकते हैं। पदार्थ यानि सुपरकंडक्टर्स, सुपरफ्ल्यूड्स या पतली मैग्नेटिक फिल्मों आदि की असामान्य अवस्थाओं का अध्ययन करने के लिए उन्होंने अत्याधुनिक गणितीय विधा "**टोपोलॉजी**" का उपयोग किया।

"**टोपोलॉजी**" पद्धति व विधा, ज्यामिति गणित के विस्तार वाला एक बड़ा क्षेत्र है। इसमें उन गुणों का अध्ययन किया जाता है, जो वस्तुओं को सतत् रूप से विकृत करने पर भी उनमें बने रहते हैं। इन वैज्ञानिकों के शोध निष्कर्ष के बाद यह माना जा रहा है कि यह गुण एक सामान्य पदार्थ में भी विकसित किया जा सकता है। जिसके चलते किसी छोटी चीज में भी ढेर सारी ऊर्जा का संचय एवं सूचनाओं का संग्रह किया जा सकता है। **प्रोफेसर** डेविड जे0 थाउलेस को पूर्व में वोल्फ प्राइज इन फिजिक्स, डिराक मेडल ऑफ द इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स, मैक्सवेल मेडल एण्ड प्राइज(1973), लार्स ओसेंगर(2000) प्राप्त हैं। **प्रोफेसर** एफ0 डन्कन एम0 हेल्डेन को पूर्व में आलिवर ई0 बक्ले कन्डेन्स्ड मैटर प्राइज(1993) प्राप्त है। इन वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार राशि के तहत 80 लाख स्वीडिश क्रोनर(9.33 लाख डॉलर, लगभग 6.20 करोड़ रूपये) का आधा हिस्सा **प्रोफेसर** डेविड जे0 थाउलेस को तथा बचे हुए आधे हिस्से को दो अन्य पुरस्कृत **प्रोफेसर** एफ0 डन्कन एम0 हेल्डेन एवं **प्रोफेसर** जे0 माइकल कोस्टेर्लिट्ज के मध्य बराबर–बराबर बाँटा जायेगा।

3. रसायन विज्ञान के क्षेत्र में

जीन–पियरे सॉवेज
(जन्म–1944, पेरिस, फ्रांस)

सर जे0 फ्रेजर स्टोड्डार्ट
(जन्म–1942, एडिनबर्ग, यू0के0)

बर्नार्ड एल0 फेरिन्गा
(जन्म–1951, बर्जर–कॉम्पसकम, द नीदरलैंड्स)

वर्ष 2016 में रसायन विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा स्वीडन में दिनांकः 05.10.2016 को घोषित किये गये। यूनिवर्सिटी ऑफ स्ट्रॉसबर्ग, स्ट्रॉसबग, फ्रांस, के **प्रोफेसर जीन–पियरे सॉवेज**, नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी, इवान्स्टन, आई.एल., यू0एस0ए0, के **प्रोफेसर सर जे0 फ्रेजर स्टोड्डार्ट**, यूनिवर्सिटी ऑफ ग्रोनिन्जेन, ग्रोनिन्जेन, द नीदरलैण्ड्स, के **प्रोफेसर बर्नार्ड एल0 फेरिन्गा** को रसायन विज्ञान के क्षेत्र में "**फॉर द डिजायन एण्ड सिन्थेसिस ऑफ मॉलिक्यूलर मशीन्स**"(**सूक्ष्म आणविक मशीन की संरचना एवं संश्लेषण के लिए**) पर अभूतपूर्व योगदान हेतु संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार हेतु चयन किया गया। इन वैज्ञानिकों ने मिलकर एक ऐसी आणविक मशीन के विकास पर अनुसंधान किया जो बाल से भी एक हजार गुना पतली है। इससे इस प्रकार की सूक्ष्म मशीनों के बनाने में मदद मिलेगी जिसका प्रयोग शरीर के भीतर दवा पहुँचाने के लिए किया जा सकेगा। उदाहरण के लिए कैंसर की कोशिकाओं में ऐसी नैनो मशीनों की सहायता से दवा पहुँचाई जा सकेगी जो अभी तक संभव नहीं हो पाई है। नैनोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में इस थ्योरी की सहायता से स्मार्ट मशीनों को तैयार किया जा सकेगा। इन वैज्ञानिकों के इस अमूल्य योगदान से भविष्य में अणुओं को जोड़कर कार की मोटर से लेकर छोटी मांसपेशियों तक का निर्माण संभव होगा।

4. **शांति के क्षेत्र में**

जुआन मैनुएल सैंटोस(जन्म–1951, बोगोटा, कोलम्बिया)

वर्ष 2016 में शांति के नोबेल पुरस्कार हेतु दिनांकः 07.10.2016 को नॉर्वीजियन नोबेल एकेडेमी, ओस्लो, नॉर्वे, के अध्यक्ष कॉसी कलमन फाइव द्वारा कोलंबिया के राष्ट्रपति जुआन मैनुएल सैंटोस को उनके द्वारा देश में पिछले पचास वर्षों से चल रहे गृह युद्ध को समाप्त करने की दिशा में किये गये निर्णायक प्रयासों के चलते चुना गया। इस गृह युद्ध में 2 लाख बीस हजार लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी तथा साठ लाख लोगों को विस्थापित होना पड़ा था। सैंटोस को पुरस्कृत करने के फैसले को कई क्षेत्रों में आश्चर्यजनक माना जा रहा है। इसका कारण यह है कि पिछले महीने 26 सितम्बर, 2016 को विद्रोही संगठन रिवोल्यूशनरी आर्म्ड फोर्सेज ऑफ कोलंबिया(एफ0ए0आर0सी0) के प्रमुख रॉड्रिगो लॉनडोनो के साथ सैंटोज ने जो ऐतिहासिक शांति समझौता किया था, उसकी शर्तों को मतदाताओं ने शुरू में ही खारिज कर दिया था। इसके लिए 2 अक्टूबर, 2016 को जनमत संग्रह प्रस्तावित था परन्तु देशवासियों के विरोध को देखते हुए ऐसा संभव नहीं हो सका। यह पुरस्कार घोषित करने के पीछे नोबेल समिति के अध्यक्ष द्वारा यह दलील दी गई कि गृह

युद्ध प्रभावित देश में इस प्रयास से शांति स्थापित करने में मदद मिलेगी तथा सम्पूर्ण विश्व में इसके चलते शांति प्रक्रिया में तेजी आयेगी। अक्टूबर 10, 2016 को दिये गये अपने एक कथन में कोलंबिया के राष्ट्रपति जुआन मैनुएल सैंटोस द्वारा नोबेल समिति द्वारा प्रदान की जाने वाली नोबेल पुरस्कार राशि (80 लाख स्वीडिश क्रोनर(9.33 लाख डॉलर, लगभग 6.20 करोड़ रूपये) को अपने देश में संघर्ष पीड़ितों हेतु दान कर दिये जाने की घोषणा की गई।

5. **अर्थशास्त्र के क्षेत्र में**

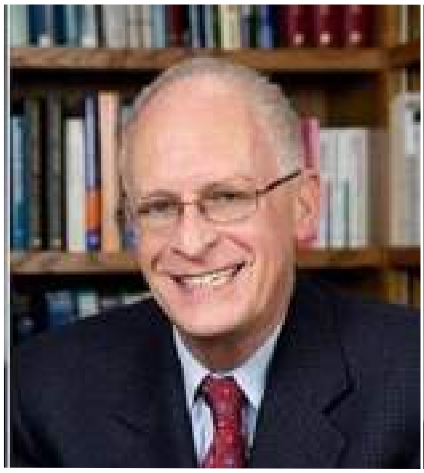

ओलिवर हार्ट (जन्म–1948, लन्दन, यू0के0)

बेंग्ट होल्मसट्रॉम (जन्म–1949, फिनलैण्ड)

वर्ष 2015 में, अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में अर्थशास्त्र विज्ञान के लिए प्रदान किया जाने वाला सवेरिजेस रिक्सबैंक पुरस्कार 68 वर्षीय ब्रिटिश मूल के अमरीकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर **ओलिवर हार्ट**, अर्थशास्त्र विभाग, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज, यू0एस0ए0, तथा 67 वर्षीय फिनिश मूल के अमरीकी अर्थशास्त्री एवं प्रबंधन प्रोफेसर **बेंग्ट होल्मसट्रॉम**, मैसाक्यूसेट्स इंस्टीटूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कैम्ब्रिज, एम0ए0, यू0एस0ए0, को संयुक्त रूप से उनके उत्कृष्ट कार्य **"फॉर देयर कॉन्ट्रीब्यूश्सन्स टू कॉन्ट्रेक्ट थ्योरी"(अनुबंध सिद्धांत पर योगदान हेतु)** को चुना गया। नोबेल समिति के कथनानुसार वर्ष 2016 के विजेताओं ने अनुबंध सिद्धांत को विकसित किया है। इसमें शीर्ष अधिकारियों के लिए प्रदर्शन आधारित वेतन, बीमा में कटौती योग्य व सह भुगतान और सार्वजनिक क्षेत्र की गतिविधियों का निजीकरण जैसे अनुबंध प्रारूप में कई विविध मामलों का व्यापक विश्लेषण किया गया है।

इन दोनों अर्थशास्त्रियों को नोबेल पुरस्कार राशि के तहत 80 लाख स्वीडिश क्रोनर(9.33 लाख डॉलर, लगभग 6.20 करोड़ रूपये) का आधा–आधा हिस्सा प्राप्त होगा।

6. **साहित्य के क्षेत्र में**

बॉब डायलन(जन्म–1941, ड्यूलुथ, मिन्नेसोटा, यू0एस0ए0)

वर्ष 2016 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार हेतु रॉयल स्वीडिश एकेडमी द्वारा दिनांकः 13.10.2016 को 75 वर्षीय अमेरिकी गायक, कलाकार, व संगीत लेखक **बॉब डायलन** को उनके उल्लेखनीय कार्य **"फॉर हैविंग क्रियेटेड न्यू पोएटिक**

एक्सप्रेशन्स विदिन द ग्रेट अमेरिकन सॉन्ग ट्रेडिशन"(**अमेरिकी गीतों की परंपरा में कविता के नये भावों को रचने के लिए**) के लिए चुना गया। साहित्य के नोबेल पुरस्कारों के इतिहास में यह पहली बार है जब किसी गीतकार और गायक को इस पुरस्कार हेतु चुना गया है। बॉब डायलन का लेखन उपन्यास, कविता या किसी परम्परागत विधा में नहीं आता है, जिसके लिए अभी तक यह पुरस्कार दिया जाता रहा है। इस कारण से साहित्यकारों के एक समूह ने इसका विरोध करते हुए कहा है कि इससे साहित्य की सीमाओं को पुनः परिभाषित करना होगा। यद्यपि साहित्य के नोबेल पुरस्कारों हेतु लोकगायकों का नामांकन तो पहले भी कई बार हुआ है लेकिन कभी भी उन्हें पुरस्कार हेतु गंभीर दावेदार नहीं माना जाता था। बॉब डायलन ने सन् 1959 में संगीत के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया था। तब से अब तक उनके द्वारा अमेरिकन संगीत परिपाटी को नये आयाम प्रदान किये गये हैं तथा पिछले पाँच दशकों से प्रचलित संगीत व संस्कृति में उनका प्रभाव रहा है। सन् 1965 में उनके द्वारा छः मिनट तक अकेले रिकार्ड किया गया उनका संगीत "**लाइक ए रोलिंग स्टोन**" आज भी अमेरिका में प्रचलित संगीतों में शुमार है। बॉब डायलन को अमेरिकन लोक संगीत पुनरुद्धार का द्योतक माना जाता है। उनके द्वारा गाये गये शुरुआती गीत "**ब्लोइन इन द विन्ड**" व "**टाइम्स दे आर ए–चेंजिन**" अमेरिकन सिविल अधिकार और युद्ध विरोधी आंदोलन के गान के रूप में प्रचलित हुए। सन् 1960 के मध्य में बॉब डायलन द्वारा की गई रिकॉर्डिंग को तत्कालीन रॉक संगीतज्ञों द्वारा भी अपनाया गया जिसके चलते वह अमेरिकन संगीत के उच्च शिखर पर पहुँच गये, जिसके कारण उन्हें लोक संगीत आंदोलन के अन्य विरोधियों की निन्दा व आलोचना का सामना भी करना पड़ा। डायलन के गीतों में विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, दार्शनिक और साहित्यिक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। उनके संगीत कैरियर के प्रारम्भिक दौर में वह प्रसिद्ध संगीतकार लेखकों वुडी गुथराई, रॉबर्ट जॉनसन तथा हैंक विलियम्स से अत्यन्त प्रभावित थे तथा उन्होंने कई भाषाओं– अंग्रेजी, स्कॉटिश एवं आयरिश में संगीत लिखे तथा गाये।

सन् 1994 से अब तक डायलन ने ड्रॉइंग और पेंटिंग्स की छः किताबें प्रकाशित की तथा उनका कार्य विश्व की बेहतरीन गैलरीज में प्रदर्शित हुआ। संगीतज्ञ के रूप में डायलन ने 100 मिलियन रिकॉर्ड से अधिक बेचे, जिसने उन्हें अपने समय के सर्वाधिक बिकने वाले कलाकार व संगीतज्ञ के रूप में स्थापित किया। डायलन को कई प्रसिद्ध पुरस्कार भी प्राप्त हुए जिनमें ग्रैमी एवार्ड्स, ए गोल्डेन ग्लोब एवार्ड, तथा एकेडेमी एवार्ड आदि प्रमुख हैं। डायलन को रॉक एण्ड रोल हाल ऑफ फेम, मिन्नेसोटा म्यूजिक हाल ऑफ फेम, नैशविले हाल ऑफ फेम तथा सॉन्गराइटर्स हाल ऑफ फेम में भी सम्मिलित किया गया। वर्ष 2008 में पुलित्जर ज्यूरी द्वारा डायलन को उनके कार्य "his profound impact on popular music and American culture, marked by lyrical compositions of extraordinary poetic power." पर स्पेशल साईटेशन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मई 2012 में अमेरिका के राष्ट्रपति बाराक ओबामा द्वारा डायलन को "**प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम**" सम्मान से नवाजा गया। बॉब डायलन को नोबेल पुरस्कार की सम्पूर्ण राशि(80 लाख स्वीडिश क्रोनर या 9.33 लाख डॉलर या लगभग 6.20 करोड़ रुपये) का पूरा हिस्सा प्राप्त होगा।

संदर्भ

1. www.nobelprize.org
2. हिन्दी दैनिक समाचार पत्र– दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, दिनांकः 04, 05, 06, 08, 11, 14 2016।